461 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 39 | षष्ठम् अंक | जनवरी 2017

इस अंक में...

13 मात्र समर्पण ही नहीं, समझदारी भी जरूरी है
16 राष्ट्रीय घटनाक्रम
23 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
32 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
37 नवीनतम सामान्य ज्ञान
42 राज्य समाचार
43 खेलकूद
48 भारत की प्रमुख नदियाँ
51 रोजगार समाचार
53 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
56 युवा प्रतिभाएं
63 फोकस—संयुक्त राष्ट्र संघ के सम्पोषणीय विकास लक्ष्य
68 स्मरणीय तथ्य
71 विश्व परिदृश्य
77 आर्थिक लेख—(i) सेबी—एफएमसी विलय : प्रासंगिकता एवं चुनौतियाँ
80 (ii) वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) भारतीय अर्थव्यवस्था में एक नई पहल
82 सामयिक लेख—भारत में जल संकट की चुनौतियाँ और समाधान
85 संवैधानिक लेख—भारतीय संविधान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
89 पर्यावरण लेख—जलवायु अनुकूलन, वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत एवं भारत
91 सूचना एवं संचार लेख—इण्डिया स्टैक : प्लेटफॉर्म एक-लाभ अनेक
93 विज्ञान लेख—भू-जैव रसायन चक्र
96 अन्तर्राष्ट्रीय लेख—दक्षिण चीन सागर विवाद : चीन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की अवहेलना
97 स्वच्छता पर विशेष लेख—स्वच्छ भारत और जीवनदायिनी नदियों की पावनता का सम्बन्ध
101 सार संग्रह
105 वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन—(i) उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. मुख्य परीक्षा, 2016
113 (ii) आर.ए.एस./आर.टी.एस. प्रारम्भिक परीक्षा, 2016
123 (iii) नाबार्ड असिस्टेंट मैनेजर परीक्षा, 2016
125 उत्तराखण्ड वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान
129 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
131 ऐच्छिक विषय—(i) दृश्य कला—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
132 (ii) अर्थशास्त्र—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
141 वार्षिक रिपोर्ट 2015-16—पेयजल तथा स्वच्छता क्षेत्र में अनुसंधान, विकास, मिशन एवं प्रोग्राम्स के बढ़ते चरण—पर्यावलोकन
144 नोबेल पुरस्कारों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य
146 तर्कबुद्धि—नेशनल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड प्रशासनिक अधिकारी परीक्षा, 2015
151 संख्यात्मक अभियोग्यता—आई.बी.पी.एस. पी.ओ./एम.टी. (मुख्य) परीक्षा, 2015
157 अपना ज्ञान बढ़ाइए
158 क्या आप जानते हैं ?
159 महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ
162 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—लोकहितकारी वाद आम नागरिकों की आशा का केन्द्रबिन्दु है
163 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—प्रतिभा पलायन
165 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-450 का परिणाम
166 सामान्य हिन्दी—उत्तर प्रदेश सबोर्डिनेट सम्मिलित अवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा, 2016
167 अर्द्धवार्षिकांक

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

मात्र समर्पण ही नहीं, समझदारी भी जरूरी है

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

With intelligence and humility and dedication as our ammunition, we can wage the peace throughout the world with a strength beyond armies, destroying nothing except hate, greed and distrust. —**Paul G. Hoffman**

आप शायद सुनकर चौंक रहे होंगे, क्योंकि हर कोई समर्पण के ही गीत गाता है. सदा परमात्मा या गुरु को अर्पण करने की ही बात करता है. साधु-सन्तों, महात्माओं को सुनो, तो वे भी आपको समर्पण का ही पाठ पढ़ाते मिलेंगे, किन्तु हमारा अनुभव यह कहता है कि समर्पण तभी सम्भव हो सकता है, तभी वास्तविक हो सकता है, जब आप समझदार भी होंगे. नासमझ व्यक्ति समर्पण भी पूरा नहीं कर सकेगा, क्योंकि उसकी नासमझी जब कभी अहं व बहस में तब्दील हो जाएगी तो वह समर्पण की जगह पर भी लड़ पड़ेगा. अपने इष्ट गुरु के नाम के गीत भी गा लेगा और अपनी डफली की तान भी छोड़ने को तैयार नहीं हो सकेगा यानि खुद की बात भी चलाता रहेगा. जैसे एक पुरानी लोकोक्ति है कि—

नादां की दोस्ती जी का जंजाल

अर्थात् दोस्ती भी अगर नादान से की गई है, बेवकूफ व अल्हड़-आवारे के साथ की गई है, तो वह भला नहीं कर सकेगी, बहुत सम्भव है कि ऐसा दोस्त मुसीबत में काम आने की बजाय स्वयं मुसीबत का घर बन जाए. वह आपकी साख बढ़ाने की बजाय उसकी साख उड़ाने वाला बन जाए. वह कहीं भी कभी भी कुछ ऐसा कर दे या बोल दे, तो आपके जी का जंजाल बन जाए. ऐसे में आप क्या कहेंगे ? यही ना कि कुछ अच्छा करने की बजाय सारा श्रम और समय फटी को सीने में ही लग जाता है. पैबन्द लगाने में ही लग जाता है. ये दोस्ती है या दुश्मनी का एक अलग तरीका. खैर, हम चेते कि हम स्वयं भी ऐसे नादां तो नहीं हैं कि हमारी वजह से हमारे परिजनों और मित्रों के जीवन में अशान्ति व्याप्त हो रही हो. हम किसी को भी दिक्कत में डालने वाले तो नहीं बन रहे हैं. हमें अपनी दोस्ती, अपने प्यार और समर्पण के रिश्तों में निम्नवत् बातों से बचकर रहना चाहिए—

1. परस्पर शंका और शिकायतें.
2. अनावश्यक इच्छाएं व अपेक्षाएं.
3. अधिक महत्व पाने की लालसाएं.
4. कल्पित भय व दुःखपरक सोच बनाने की आदतें.
5. अनुपयोगी व अप्रीतिकर बातों को लम्बा खींचने की आदतें.
6. अपनी मानसिकता व शर्तें अन्य को मनवाने की इच्छा.
7. दोषारोपण, परालोचना, तानाकशी व निंदा-चुगली की आदतें.
8. काल्पनिक सुखों में रस लेने की वृत्तियाँ.
9. गुटवाद (Groupism) बनाकर कलह करने की वृत्ति.
10. निराशा उत्पन्न करने वाली वाणी.
11. पुराने विवादित मुद्दों पर बार-बार बहस करने की आदतें.

प्रेम-निष्ठा व समर्पण के सम्बन्धों में ये तीन सद्गुण अवश्य हों—

●●●